रात्रीक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है 3.2.68

भभके पर भी मनुष्य खैंचते हैं। बड़े2 सेंटर्स पर ऐसे भभका करते हैं जो मनुष्य खैंचकर आवे। है तो फ्री। ऐसे भी नहीं छोटे2 बच्चे भी अंदर घुस पड़े। वह भी सम्भाल रखनी है। आजकल शराबी–कबाबी तो बहुत हैं ना। सरकारी म्यूजियम में तो कोई भी जाते हैं। यह हैं पवित्र चित्र। यह तो जैसे कि मंदिर है। कोई गंदा अंदर न आये। यह भी आगे चलकर प्रबंध करना होगा। पूछा जावेगा स्नान किया है? नहीं तो जा नहीं सकते। पवित्र ही जाय सके। बहुत ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो लैट्रिन कर स्नान नहीं करते हैं। वह समय आवेगा खासकर इस जगह (आबू मधुबन की हॉल में) पतित को अलॉ नहीं करेंगे। और सेंटर्स पर तो पतितों को जाना पड़े। यहां के लिए ऐसा प्रबंध किया जावेगा कोई भी पतित घुस न सके। वास्तव में तुम बच्चे सारे विश्व को पवित्र बनाते हो योगबल से। कितना बच्चों को नशा चढ़ना चाहिए। मूल बात है ही पवित्रता की। पवित्रता की बात पर मंदिर याद आते हैं। पढ़ाई की बात पर कॉलेज याद आते हैं। यह तो है। चित्रों पर पढ़ाया जाता है। बच्चों को खयाल आना चाहिए हम श्रीमत पर क्या कर रहे हैं। स्वच्छ रहना है। अंदर में भी कोई बात न रहनी चाहिए। बच्चों को समझाया जाता है अशरीरी भव। यहां पार्ट (बजाने) आये हो। अविनाशी पार्ट है जो बजाते ही रहते हैं। जो भी हैं सभी को अपना पार्ट बजाना है। यह नालेज बुद्धि में रहनी चाहिए। किसको भी समझाय सकते हो। इसमें लज्जा की बात नहीं। सीढ़ी पर तुम किसको भी समझाय सकते हो। रावणराज्य है ही पतित ,रामराज्य है पावन। फिर पतित से पावन कैसे बनें? ऐसी2 बातों पर रमण करना चाहिए। इसको ही विचार–सागर–मंथन कहा जाता है। 84का चक्र याद आना चाहिए। यह तो बहुत सहज है। बाप ने कहा है मुझे याद करो। यह है रुहानी यात्रा। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। उन जिस्मानी यात्रा से तो और ही विकर्म बनते हैं। कुछ न कुछ सर्विस करनी चाहिए। बोलो, यह ताबीज है। इनको समझाते रहेंगे तो सभी दुःख दूर हो जावेंगे। (ताबीज) पहनते ही हैं ग्रहाचारी वा बीमारी के लिए। तुम्हारी आत्माएं व्यापार कर रही हैं। याद से ही कमाई होगी। अभी तो मौत सामने खड़ी है। तो पढ़ाई में पूरा अटेंशन देने में ही बच्चों का कल्याण है। अच्छा, रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमार्निंग।

प्वाइंट्स– बच्चों को यह तो निश्चय है बाप ने हमको अनेक बार मनुष्य से देवता बनाया है। यह भी बुद्धि में तो तो भी अहो सौभाग्य। यह बेहद का बड़ा स्कूल है। वह होता है हद का छोटा। बाप को तो बहुत तरस पड़ता है कैसे समझाउं? कोई2 से तो भूत निकलता ही नहीं है। दिल पर चढ़ने बदली और ही गिर पड़ते हैं। कोई बच्चियां तो तैयार हो रही हैं अनेकों का कल्याण करने। कोई तो फिर अकल्याण भी करते हैं। कल्याण नहीं तो अकल्याण ही करते हैं। यहां तो वातावरण भी ज्ञान का चलना है। बाकी बंद। याद की यात्रा में जो रहते हैं तो दूसरों को भी सिखलाना पड़े। ज्ञान है तो दूसरों को भी देना पड़े। याद की यात्रा तो सेकेंड में किसको समझाय सकते हैं। यह समझ जाये तो स्वर्ग में चले जाये। ट्रेन में भी तुमको बहुत मिलते हैं। बैज से तुम किसको भी सर्विस कर विश्व का मालिक बनाय सकते हो। यह बेहद का बाप है। उनसे यह वर्सा मिलता है। बाप को जानने से तुम पवित्र बन मुक्तिधाम चले जावेंगे। कल्प2 जो पढ़ते आये हैं वही पढ़ेंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ता। तुम कहेंगे कल्प बाद भी हम यही ज्ञान सुनेंगे। यह भी टेव पड़ जानी चाहिए। एक जन्म के पाप तो लिख कर देते हैं तो कुछ हल्का हो जाये ;परंतु जन्म–जन्मांतर के पापों का कैसे मालूम पड़े? वह कैसे हल्का होगा? इसके लिए फिर योग चाहिए। हम जन्म–जन्मांतर के पापी ,अजामिल हैं। खयाल करना चाहिए जन्म–जन्मांतर के पाप कैसे कटेंगे। इतना बोझा उतरने में टाइम लगता है। बैटरी का ओना बहुत रहना चाहिए। पतितात्मा से पुण्यात्मा तो बने। ओम।

हलो , मीठी2 आत्माएं ,बापदादा साथ मधुबन निवासी सभी आत्माओं को दिल व जान सिक व प्रेम से यादप्यार स्वीकार करना जी। अच्छा, अब विदाई लेते हैं।